

Padma Bhushan



SHRI RASHID KHAN

Shri Rashid Khan is an Indian classical musician in the Hindustani music tradition belonging to the Rampur-Sahaswan gharana. He is the great-grandson of Gharana founder Inayat Hussain Khan, belonging to the lineage of Mian Tansen. He is also the nephew of Ustad Ghulam Mustafa Khan.

2. Born on 1st July 1966 in Sahaswan, Badayun, Uttar Pradesh, Shri Rashid Khan received his initial training from his maternal grand-uncle, Ustad Nissar Hussain Khan (1909-1993). As a child he had little interest in music. He received his main training from Nissar Hussain Khan. He gave his first concert at age eleven in Delhi. In April 1980, when Nissar Hussain Khan moved to the ITC Sangeet Research Calcutta, he too joined him. By 1989, he was acknowledged as a musician all over the world.

3. Shri Rashid Khan developed exceptional expertise in use of sargams and sargam taankari (play on the scale). He is also a master of the tarana. His renderings stand out for the emotional overtones in his melody elaboration. He also experimented with fusing pure Hindustani music with lighter musical genres e.g. performed jugalbandis, with a number of musicians of different genres. He has contributed his voice in Indian Cinema as well.

4. Shri Rashid Khan established the first most high-tech music academy, Ustad Rashid Khan's Academy in Kolkata in 2000 and another in Agartala, Tripura in 2010. In 2020, he launched TFN 2020, whereby the academy is now connected globally on a Phygi platform. Also he is the first to introduce Music Yoga and Vedic chanting in the academies regular curriculum. He has mastered in Tarana, prefers Khayal style, knows all parts of tonal variations, dynamics and tymbre adjustment. Legendary artist Pandit Bhimsen Joshi once remarked that Rashid Khan was the "assurance for the future of Indian vocal music".

5. Shri Rashid Khan's Non-film discography includes A Maestro in the Making (2000); The Genius of Rashid Khan (2000); The Song of Shiva (2000); In London (2000); Classical Vocal: Ustad Rashid Khan More Ghar Aao (Live) (1998); Selection - Kaushi Kanada - Charukeshi - Barwan (1996); Khyal (1996); Shyam Kalyan (1996); A Tribute to a Living Legend (1995) and many more.

6. Shri Rashid Khan has been honored with several awards like Sangeet Natak Academy Award, Global Indian Music Academy Awards (GIMA) (2010), Maha Sangeet Samman Award (2012) and Mirchi Music Awards (2013).

पद्म भूषण



श्री राशिद खान

श्री राशिद खान रामपुर—सहसवां घराने की हिंदुस्तानी संगीत परंपरा में भारतीय शास्त्रीय संगीतज्ञ हैं। वे मियां तानसेन के वंश के घराने के संस्थापक इनायत हुसैन खान के परपोते हैं। वे उस्ताद गुलाम मुस्तफा खान के भतीजे भी हैं।

2. 1 जुलाई, 1966 को उत्तर प्रदेश के बदायूं के सहसवां में जन्मे श्री राशिद खान ने अपना प्रारंभिक प्रशिक्षण अपने नाना उस्ताद निसार हुसैन खान (वर्ष 1909—1993) से प्राप्त किया। उन्हें बचपन में संगीत में कम ही रुचि थी। उन्होंने अपना मुख्य प्रशिक्षण निसार हुसैन खान से प्राप्त किया। उन्होंने अपना पहला संगीत कार्यक्रम ग्यारह वर्ष की आयु में दिल्ली में किया था। अप्रैल 1980 में, जब निसार हुसैन खान आईटीसी संगीत अनुसंधान कोलकाता चले गए, तो वे भी उनके साथ जुड़ गए। वर्ष 1989 तक, उन्हें पूरी दुनिया में एक संगीतकार के रूप में मान्यता मिल चुकी थी।

3. श्री राशिद खान ने सरगम और सरगम तानकारी के उपयोग में असाधारण विशेषज्ञता हासिल की। वे तराना के भी उस्ताद हैं। उनका गायन उनके माधुर्य के भावनात्मक प्रभाव के कारण विशिष्ट बन जाता है। उन्होंने शुद्ध हिंदुस्तानी संगीत को हल्की संगीत शैलियों के साथ मिलाने का भी प्रयोग किया। विभिन्न शैलियों के कई संगीतकारों के साथ जुगलबंदी का प्रदर्शन किया। उन्होंने भारतीय सिनेमा में भी अपनी आवाज दी।

4. श्री राशिद खान ने वर्ष 2000 में कोलकाता में उस्ताद राशिद खान नाम से पहली और वर्ष 2010 में अगरतला, त्रिपुरा में दूसरी सबसे हाई—टेक संगीत अकादमी की स्थापना की। वर्ष 2020 में उन्होंने टीएफएन 2020 आरंभ किया, जिससे अकादमी अब विश्व स्तर पर एक फाइजी मंच से जुड़ी हुई है। उसके अलावा, ये इन अकादमियों के नियमित पाठ्यक्रम में संगीत योग और वैदिक मंत्रोच्चार की शुरुआत करने वाले पहले व्यक्ति हैं। उन्होंने तराना में महारत हासिल की है, वे ख्याल शैली को प्राथमिकता देते हैं, वे अलाप के उतार—चढ़ाव, गतिशीलता और लय समायोजन के सभी पक्षों के उस्ताद हैं। महान संगीतज्ञ पंडित भीमसेन जोशी ने एक बार कहा था कि राशिद खान “भारतीय संगीत गायन के भविष्य के लिए आश्वासन” हैं।

5. श्री राशिद खान की गैर—फिल्मी डिस्कोग्राफी में ए मेस्ट्रो इन द मेकिंग (वर्ष 2000); द जीनियस ऑफ राशिद खान (वर्ष 2000); द सॉन्ग ऑफ शिवा (वर्ष 2000); इन लंदन (वर्ष 2000); क्लासिकल वोकल: उस्ताद राशिद खान मोरे घर आओ (लाइव) (वर्ष 1998); सेलेक्शन — कौशी कणाद — चारुकेशी — बरवान (1996); ख्याल (1996); श्याम कल्याण (1996); ए ट्रिब्यूट टू ए लिविंग लीजेंड (1995) और अन्य शामिल हैं।

6. श्री राशिद खान को संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार; वैश्विक भारतीय संगीत अकादमी पुरस्कार (जीआईएमए) (वर्ष 2010); महा संगीत सम्मान पुरस्कार (वर्ष 2012) और मिर्ची संगीत पुरस्कार (वर्ष 2013) जैसे कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है।